श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - ८

जनवरी - २०२२

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. पंचम काल में छोटे से छोटे गुण की प्राप्ति भी अत्यंत ..... बन गई है ।
२. शास्त्रकार महर्षिओ ने बारह प्रकार के तप समझाकर ..... जीवों पर महान उपकार किया है ।
३. जैन साधु के वेष में मोक्ष में जाये वह ..... सिद्ध ।
४. कर्म को ..... के साथ रहने का काल समय स्थिति बंध कहलाता है ।
५. ..... पक्ष याने परिवार जिसका हो वह सुपक्ष है ।
६. श्रमण भगवान महावीर प्रभु के पिता ..... गोत्र वाले थे ।
७. सामान्य रुप सी सबेरे देववंदन के पश्चात ..... के लिये जाना चाहिये ।
८. विवेक ..... अन्धकार का नाश करने वाला होने से रत्न कहलाता है ।
९. योग की एकाग्रता अथवा ..... वह ध्यान है ।
१०. अनंतबल वाले प्रभु ने ..... के वृक्ष को प्रथम स्पर्श किया और पकडकर सर्प को दूर फेंक दिया ।
११. ..... वनस्पतिकाय का शरीर एक हजार योजन से अधिक है ।
१२. सबेरे बारह बजे तक "सुहराई" कहना और दोपहर के पश्चात ..... कहना चहिये ।
१३. अनादि काल से हमारी आत्मा ..... के रसवाली बनकर दुर्गतिओ में भटकती रही है ।
१४. दीर्घदृष्टि के स्वामी के पास ..... और आध्यात्मिक भी जीवन होता है ।
१५. ..... कर्म द्वारपाल जैसा है ।
१६. प्रभु के वार्षिक दान देने के समय ज्योतिषि देव ..... को दान लेने के समाचार देते हैं ।
१७. गुणवान को पहचानने के लिये ..... दृष्टि होना आवश्यक है ।
१८. हम सबने ..... के उदय से धर्म को पाया है ।
१९. अंतराय कर्म की जघन्य स्थिति बंध ..... है ।
२०. श्रावक की न्याय नीति के कारण है दुष्काल ..... में परिवर्तित हो गया ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. दो वक्त वांदणा सूत्र बोलने पूर्वक बारह आवर्त से जो वंदन करते हैं उसे कौनसा वंदन कहते हैं ?
२. राजा के भंडारी जैसा कौन सा कर्म है ?
३. दुर्योधन की सभा में कौन दिखाई नहीं दिया ?
४. प्रभु वीर ने चारित्र स्वीकारा तब कौनसा ज्ञान उत्पन्न हुआ ?
५. यशोदा के जँवाई का नाम क्या था ?
६. गुणों का पुजारी कौन ?
७. दहीं खाने की मजा तो पालिताणा में आता है, यह कौनसी कथा है ?
८. कन्या कौनसे तप से ज्ञान पंचमी करती थी ?
९. गुरु महाराज को कौनसे पाठ से सुख शाता पूछी जाती है ?
१०. प्रभु का जन्म महोत्सव किस पर्वत पर किया जाता है ?
११. तीर्थंकर पद पाये बिना मोक्ष पाये वे कौनसे सिद्ध ?
१२. श्रावकों का चौदवां गुण कौनसा ?
१३. बाह्य तप का दूसरा नाम क्या ?
१४. मोहराजा ने किसे धर्मभ्रष्ट करने की जाहिरात की ?
१५. आलोचना का किस तप में सामवेश होता है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. अपतिअं २) उवेहेइ ३) जोयण ४) सिरसा ५) संखेवेण ६) मुक्को ७) मज्ज ८) सहावो ९) वेयणीओ १०) जाणह
११. इअ १२) कुलाल १३) नायव्वो १४) रयहरण १५) विणओ १६) तह १७) बज्जो १८) सुहुमं १९) रयणप्पहा
२०. अयराइं

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) स्वाध्याय तप	१) कर्म का स्वभाव	६) विदेहदिन्ना	६) तप
२) वर्धमान कुमार	२) तीर्थ सिद्ध	७) जंबुस्वामी	७) चौथा शिष्य
३) सुदीर्घदर्शी	३) रोहिणी	८) प्रकृति बंध	८) गोत्र कर्म
४) कुंभार जैसा	४) कथा	९) स्त्री	९) जैनेन्द्र व्याकरण
५) बाल विधवा	५) परावर्तना	१०) वृतिसंक्षेप	१०) प्रीतिकारिणी

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. आचार्य भ. के गुण कितने ?
२. एक योजन बराबर कितने गाउ ?
३. आठ कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ कितनी ?
४. एक समय में कितनों से ज्यादा मोक्ष में न जायें ?
५. तीर्थंकर के दिये दान के प्रभाव से नया रोग कितने वर्ष तक न आये ?
६. कितनी दिगकुमारिकायें शुचिकर्म करने के लिये आती हैं ?
७. दादा ने कन्या को आने वाले साल में कितने उपवास का पच्चक्खाण देने के लिये गुरु महाराज को कहा ?
८. छंठवी नारकी के जीवों की ऊँचाई कितने धनुष्य ?
९. श्री वीर प्रभु कितने वर्ष गृहवास में रहे ?
१०. साधु भ. कितने हजार शील चारित्र के अंग के धारक हैं ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. नंदिवर्धन वीर प्रभु के छोटे भाई थे ।
२. गांगेय गृहस्थ सिद्ध हुए ।
३. काया को कष्ट देकर काया पर विजय प्राप्त करना वह कायक्लेश तप है ।
४. दीर्घ दृष्टि के स्वामी धार्मिक, अध्यात्मिक और भौतिक सुखों में ही लीन रहते है ।
५. विकथा के बालक का नाम प्रमाद था ।
६. वह कन्या फॅशनपरस्त है, आधुनिक है आदि कहकर स्त्री की निंदा या प्रशंसा करना वह स्त्री कथा है ।
७. कर्म का आत्मा के साथ रहने का काल समय वह प्रदेश बंध है ।
८. प्रभु की दोहिती की नाम शेषवती और अणोज्जा था ।
९. गुरु क्षमापना सूत्र से गुरु का अविनय अपराध खमाया जाता है ।
१०. तलवार अगर शहद से लिपटी हुई है तो उसे चाटने पर जीभ कटे वह शाता वेदनीय कर्म है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. सतत सावधान बनकर सत्कथाओं में मस्त बनें ।
२. अरे भाई, क्षत पर क्षार मत डालो ।
३. सच में तो सभी सिद्ध समान स्वरुप के हैं ।
४. व्रतों की शुद्धि में वृद्धि होती है ।
५. गुरु महाराज का योग हो तो उनके पास जाकर उन्हें विधिपूर्वक वंदना करनी चाहिये ।
६. आपके पास कौनसा खजाना है ?
७. तप के बिना कर्म क्षय नहीं और कर्म क्षय के बिना मोक्ष नहीं ।
८. मेरे सामने उसकी क्या गिनती ?
९. आपकी संयम रुपी यात्रा सरलता पूर्वक हो रही है ?
१०. सर्वत्र आनंद आनंद छा गया ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. श्री वीर प्रभु का गृहवास का परिवार
२) फिट्टावंदन - थोभवंदन - द्वादशावर्त वंदन
३. जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि
४) सिद्ध के भेद कितने ? नाम लिखकर कोई तीन समझाओ ।
५. संलीनता तप, भाव, उत्सर्ग, रसबंध की माहिती दो ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com